Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 629–636

HISTORICITY AND MODERNITY OF LINGUISTICS: A STUDY

भाषा विज्ञान की ऐतिहासिकता एवं आधुनिकता: एक अध्ययन

Shobhit Kumar [1], Alok Mishra [2]

[1] Researcher, Department of Hindi, Swami Shukdevanand College, Shahjahanpur, Uttar Pradesh, India
[2] Chairman, Department of Hindi, Swami Shukdevanand College, Shahjahanpur, Uttar Pradesh, India

ABSTRACT

English: The language of any community is not easily created. It has to go through many stages of its creation, only then it becomes a mirror of the society of that time by being grammatically correct, cultured and useful for literature. Centuries pass in the creation of the language of any community, only then languages are born. This language, born from the external and internal efforts of man, travels through the group. This journey carries with it the cultural, social and religious splendor of the then society of man. All the languages created by human communities are the heritage of our collective culture. The world of languages in this world is so vast that it is not easily possible to have accurate and complete knowledge of it, but there is no answer to the curiosity of man either. He wants to know even those subjects which are beyond his control. God knows how many mysteries man has solved, how many are in the process of being solved and how many are still unsolved for the future. Intelligent man has always accepted these challenges. Knowing the history of language is no less than a challenge. Scholars are not unanimous on how it originated, but the tradition of its accurate study is called linguistics. When did the study of this linguistics begin in society? It is not easy for scholars to determine it correctly. Some linguists claim that the scientific study of language has been done from this specific time, while other linguists set new limits. It is not possible to get a standard solution to this problem easily. The presented research paper is a humble attempt to do a brief updated study of the study tradition of linguistics.

Hindi: किसी भी जनसमुदाय की भाषा सहज सुनिर्मित नहीं होती है। उसे अपने निर्माण के अनेक चरण देखने पड़ते हैं, तब कहीं वह व्याकरण सम्मत, सुसंस्कृत एवं साहित्योपयोगी होकर तत्कालीन समाज का दर्पण बनती है। किसी भी समुदाय की भाषा के निर्माण में शताब्दियां गुजर जाती हैं, तब जाकर भाषाएं जन्म लेती हैं। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक प्रयत्नों से उत्पन्न यह भाषा समूह की यात्रा करती है। यह यात्रा मानव के तत्कालीन समाज का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक वैभव साथ लेकर चलती है। मानव समुदायों द्वारा निर्मित सभी भाषाएं हमारी सामूहिक संस्कृति की धरोहर हैं। इस विश्व में भाषाओं का संसार इतना विस्तृत है जिसका सटीक एवं सम्पूर्ण ज्ञान हो पाना सहज संभव नहीं लेकिन मनुष्य की जिज्ञासा का भी जवाब नहीं। वह उन विषयों को भी जानना चाहता है जिन पर उसका वश नहीं। न जाने कितने रहस्य मनुष्य सुलझा चुका है, कितनों को सुलझाने की प्रक्रिया चल रही है और कितने ही भविष्य के लिए अनसुलझे रह गए हैं। इन चुनौतियों को सुधी मानव सदैव स्वीकार करता रहा है। भाषा के इतिहास को जानना भी किसी चुनौती से कम नहीं है। इसकी उत्पत्ति कैसे हुई इस पर भी विद्वान एकमत नहीं है लेकिन इसके सटीक अध्ययन की परम्परा का नाम भाषा विज्ञान है। इस भाषा विज्ञान का अध्ययन समाज में कब से शुरू हुआ? इसका सही-सही निर्धारण विद्वानों के लिए सरल नहीं। कुछ भाषा विज्ञानी यह दावा करते हैं कि भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन इस निश्चित समय से हुआ है, वहीं दूसरे भाषा वैज्ञानिक नई सीमा निर्धारित कर देते हैं। इस समस्या का मानक हल सहज प्राप्त होना सम्भव भी नहीं। प्रस्तुत शोध पत्र भाषा विज्ञान की अध्ययन परम्परा का संक्षिप्त अद्यतन अनुशीलन करने का विनम्र प्रयास है।

Keywords: Linguistics, Phonemes, Pratishakhya, Paurastya, Arvachina, भाषाविज्ञान, स्वन-स्वनिम, प्रातिशाख्य, पौरस्त्य, अर्वाचीन

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.2085

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

मानव मस्तिष्क में विचारों का उद्वेलन ही भाषा की उत्पत्ति का कारण रहा होगा। इसीलिए भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता है। सामान्यतः प्रचलित अर्थ यह है कि 'भाषा' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'भाष्' धातु से हुई है। 'भाष्' धातु का अर्थ है- 'व्यक्त करना' अथवा 'बोलना'। इसीलिए 'भाषा' शब्द का अर्थ है- 'बोलने की वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होता है।' यह भाषा मानव जाति के लिए प्रकृति का सबसे बड़ा उपहार है। इस भाषा के माध्यम से ही समस्त व्यवहार संभव हुए। मनुष्य के जीवन में यदि भाषा का प्रकाश न हुआ होता तो यह संसार अंधकारमय होता। भाषा के माध्यम से ही मानवता ने विकास के विभिन्न सोपानों को गढ़ा है।

भाषा विज्ञान के अध्ययन के इतिहास को समझने से पहले व्याकरण और भाषा विज्ञान के अतः संबंध को अवश्य समझ लेना चाहिए। कुछ विद्वान व्याकरण को भाषा विज्ञान के लिए सहायक बताते हैं वही भाषा शास्त्री डॉ. श्यामसुंदर दास लिखते हैं- ''भाषाविज्ञान और व्याकरण का घनिष्ठ संबंध है। व्याकरण एक कला है और भाषाविज्ञान एक विज्ञान। व्याकरण भाषा में साधुता और असाधुता का विचार करता है, और भापाविज्ञान भाषा की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।.....व्याकरण एक काल की किसी भाषा विशेष से संबंध रखता है। भाषाविज्ञान किसी भाषा की अतीत काल की आलोचना करता है तथा अन्य भाषाओं से उनकी तुलना करता है। व्याकरण नियम, उपनयिम और अपवाद का सविस्तार विवेचन करता है और भाषाविज्ञान प्रत्येक शब्द का इतिहास प्रस्तुत करता है। व्याकरण भाषाविज्ञान का एक सहायक मात्र है। व्याकरण वर्णप्रधान होने के कारण भाषाविज्ञान और व्याकरण में एक और भेद हो जाता है। व्याकरण सिद्ध और निष्पन्न रूप को लेकर ही अपना काम करता है। भाषा में जैसे रूप मिलते हैं, उन्हीं पर वह विचार करता है। प्राचीन रूप वर्तमान रूप को कैसे प्राप्त हुआ, इसके कारणों पर भाषाविज्ञान विचार करता है। भाषाविज्ञान व्याकरण का व्याकरण है। उसका विकसित रूप है। इसी गुण के कारण इसको तुलनात्मक व्याकरण अथवा ऐतिहासिक तुलनात्मक व्याकरण भी कहते हैं।''

इसी प्रकार प्रो. दिलीप सिंह अपनी पुस्तक 'भाषा का संसार' में भाषा विज्ञान के विकास क्रम को व्याख्यायित करते हुए लिखते हैं -

''सबसे पहले भाषाविज्ञान के विकास-क्रम को देखें। प्रारंभ में परंपरागत भाषाविज्ञान ने अपने सिद्धांत बनाए, अपनी प्रविधियाँ विकसित कीं और भाषा-सामग्री चयन के अपने आधार निर्धारित किए। वास्तव में सैद्धांतिक या संरचनात्मक भाषाविज्ञान का दृष्टिकोण (एप्रोच) भाषा को वस्तुपरक (ऑबजेक्टिव) मानने वाला एप्रोच था। यह भाषा को एक 'व्यवस्था', मान कर देखने का पक्षधर है जिसका लक्ष्य है-भाषा की संरचना को उघाड़ना। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दृष्टि भाषिक इकाइयों को वर्गीकृत करके उनके सह-संबंधों का निर्धारण करती है।''

भाषा विज्ञान का आरंभ शीर्षक से डॉ. श्यामसुंदर दास अपनी पुस्तक भाषा विज्ञान में भाषा विज्ञान की उत्पत्ति का बड़े सरल और सहज ढंग से निरूपण करते हैं। जिसका उदाहरण दृष्टव्य है- ''अन्यान्य अधिकांश आधुनिक विज्ञानों की भाँति भाषाविज्ञान का, इस संस्कृत रूप में, आरंभ भी पाश्चात्य देशों में ही हुआ है। पहले भाषाओं का अध्ययन बिलकुल साधारण रूप में ठीक उसी रूप में, जिसमें बालकों को आधुनिक विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है, हुआ करता था। अध्ययन का यह रूप शुद्ध साहित्यिक था, अर्थात् इस प्रकार का अध्ययन किसी भाषा के केवल साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए होता था। किसी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस भाषा के व्याकरण का अध्ययन करना आवश्यक होता है। अतएव किसी भाषा के अध्ययन के अंतर्गत उस भाषा के व्याकरण का अध्ययन भी आप से आप आ जाता है। अनेक विद्वान् ऐसे भी होते थे, जिन्हें केवल एक ही भाषा के अध्ययन से संतोष नहीं होता था और जो भाषाओं के पूर्ण पंडित होकर उन सबके साहित्य और व्याकरणों का विवेचनात्मक अनुशीलन करते थे। जब यूरोपीय लोगों ने संस्कृत भाषा का अध्ययन आरम्भ किया, तब उन्हें संस्कृत के व्याकरण में कुछ नये और विशिष्ट नियम मिले। संस्कृत भाषा के अनेक शब्दों और व्याकरण के अनेक नियमों ने उन लोगों का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया कि संस्कृत का लैटिन तथा उसकी वंशज अनेक दूसरी भाषाओं के साथ कई बातों में साम्य है। इसके अतिरिक्त आरंभ में ऐसे विद्वानों ने यह भी देखा कि बहुत पास के दो-चार प्रदेशों की भाषाओं की जिस प्रकार शब्दों और व्याकरण के नियमों आदि में बहुत अधिक समानता

होती है, उसी प्रकार, पर, उससे कुछ कम अंशों में दूर-दूर के प्रदेशों की भाषाओं के शब्दों और व्याकरण के नियमों आदि में भी कुछ समानता होती है। यह समानता देखकर विद्वानों को जो कुतूहल हुआ, मानों उसी की शांति के प्रयत्न ने इस आधुनिक भाषाविज्ञान को जन्म दिया।''

भाषा विज्ञान की ऐतिहासिकता को और अधिक सुस्पष्ट एवं सुग्राह्य बनाने के लिए इसे निम्न शीर्षकों में उल्लेखित करना उचित जान पड़ता है -

(अ) पौरस्त्य चिन्तनधारा

1) प्राचीन भाषा अध्ययन परम्परा

- पाणिनि पूर्व भाषा अध्ययन की परम्परा
- पाणिनि कालीन भाषा अध्ययन की परम्परा
- पाणिनि पश्चात् भाषा अध्ययन की परम्परा

2) अर्वाचीन भाषा अध्ययन परम्परा

(ब) पाश्चात्य चिन्तनधारा

(अ) पौरस्त्य चिन्तनधारा

3) प्राचीन भाषा अध्ययन परम्परा:

भाषा के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान महर्षि पाणिनि को विश्वभर के मनीषियों ने संसार का प्रथम श्रेष्ठ वैयाकरण माना है। पाणिनि का भाषा चिन्तन उस समय का चिन्तन है जब विश्वभर में भाषा के शुद्धिकरण को लेकर चर्चा भी आरम्भ नहीं हुई थी। अतः भाषा अध्ययन की परम्परा को हम पाणिनीय कालखण्ड को आधार बनाकर निर्धारित करने और उसका अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

- पाणिनि पूर्व भाषा अध्ययन की परम्परा
- पाणिनि कालीन भाषा अध्ययन की परम्परा
- पाणिनि पश्चात् भाषा अध्ययन की परम्परा

पाणिनि पूर्व भाषा अध्ययन की परम्परा:

भारत में भाषा अध्ययन की परंपरा प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध एवं विस्तृत रही है। अपौरुषेय कहे जाने वाले वेदों से लेकर ब्राह्मण ग्रंथों तथा आरण्यकों आदि में भी भाषा से संबंधित विचार प्रस्तुत किए गए हैं। वेदों के छह अंग कहे जाने वाले वेदांगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरूक्त) में से तीन शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त में भाषा से सम्बन्धित विचार किया गया है। जहां शिक्षा नामक वेदांग में ध्वनियों के उच्चारण से सम्बन्धित विवरण दिया गया है वहीं वेदों के व्याकरण नामक अंग में संधि, समास तथा विभक्ति आदि पर मंथन किया गया है। निरुक्त के अन्तर्गत शब्दों के मूल भावों और विभिन्न प्रकार की शब्दावली का वर्णन मिलता है। इनके अतिरिक्त यदि परोक्ष रूप से देखा जाए तो भाषा अध्ययन का ही एक क्षेत्र छंद है जिसमें वेदांग के रूप में वैदिक मन्त्रों के उच्चारण, लय एवं गायन से सम्बन्धित निर्देश अंकित किए गए हैं।

वेदों की परम्परा लंबे समय तक मौखिक रूप में चलती रही जिससे वेदों के संकलन अथवा लेखन का सही समय ज्ञात न होने से काल को लेकर विद्वानों में मतभेद रहता है किंतु यह तो निश्चित है कि वैदिक साहित्य विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। वेदों की व्याख्या करने के उद्देश्य से ही ब्राह्मण ग्रन्थों का सर्जन किया गया, जिसमें ऐतरेय ब्राह्मण में भाषा विज्ञान पर कुछ जानकारी उपलब्ध है। ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ के पदपाठों के अतिरिक्त प्रातिशाख्य भी भाषा विज्ञान का आदि स्रोत माने जाते हैं। प्रातिशाख्यों की रचना वेदों की एक एक शाखा का ध्वनि विषयक गहन अध्ययन करने के उद्देश्य से की गई थी। प्रातिशाख्यों के अन्तर्गत ध्वनियों के उच्चारण आदि का सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन बड़े ही गहन से किया गया है। वर्णों, स्वरों, संधियों, उच्चारण के गुणों व दोषों, वर्णों की उत्पत्ति आदि पर विस्तृत जानकारी इन प्रातिशाख्यों के माध्यम से प्राप्त होती है। ऋग्वेदप्रातिशाख्य, तैत्तिरीयप्रातिशाख्य, वाजसनेयिप्रातिशाख्य, अथर्ववेदप्रातिशाख्य एवं ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य आदि कई प्रातिशाख्यों का वर्णन शिक्षा आदि वेदांगों के अन्तर्गत मिलता है। वेदों के अतिरिक्त उपनिषदों में भी भाषा वैज्ञानिक चिन्तन देखने को मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद में वर्ण, स्वर, मात्रा आदि की चर्चा की गई है। लगभग 800 ई. पू. में रचित 'निघंटु' ग्रन्थ को वैदिक शब्दकोश के रूप में

भी जाना जाता है। निघंटु के इसी शब्दकोश के शब्दों पर निरूक्त की रचना करने वाले यास्क ने विस्तृत व्याख्या की है।

पाणिनि कालीन भाषा अध्ययन की परम्परा:

वैदिक भाषा अध्ययन की परम्परा के बाद भारत एवं विश्व में जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध भाषा के आचार्य हुए हैं, वे हैं पाणिनि। पाणिनि का समय ईस्वी से लगभग 450 वर्ष पूर्व माना जाता है। जब संपूर्ण विश्व में शिक्षा व ज्ञान परम्परा के प्रति लोगों की भावना उदासीन थी तब भारतवर्ष में भाषाविज्ञान का कोई इतना बड़ा विद्वान हुआ था, यह बात विश्वभर के मनीषियों के लिए लंबे समय तक आश्चर्य का विषय बनी रही। पाणिनि की विश्वप्रसिद्ध रचना अष्टाध्यायी में लगभग चार हजार सूत्रों को आठ भागों में विभाजित किया गया है। भगवान शिव के ताण्डव नृत्य के समय उनके डमरू से उद्भवित होने वाले चैदह माहेश्वर सूत्र ही पाणिनि की अष्टाध्यायी की रचना का आधार हैं। इन सूत्रों में ध्वनि विज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि पाणिनि ने भी इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव से प्राप्त किया था। नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपंचवारम्। उद्धर्त्तुकामो सनकादिसिद्धादिनेतद्विमर्शे शिवसूत्रजाल्।। इस ग्रंथ में ग्रन्थकार ने संज्ञा, समास, संधि, प्रत्यय, धातुपाठ व गणपाठ आदि का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। इस महान कृति में ध्वनि विकार आदि पर भी चर्चा की गई है जो निश्चय ही इसे भाषा विज्ञान का प्राचीनतम ग्रन्थ बनाता है।

पाणिनिकालीन विद्वान कात्यायन भी अपनी भाषा वैज्ञानिक की दृष्टि से रचित पुस्तक कार्तिक के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। प्रो. बाबूराम सक्सेना लिखते हैं- ''पाणिनि के लगभग १२५० सूत्रों पर आलोचनात्मक दृष्टि से वररुचि (कात्यायन) ने ४००० वात्तिकों की रचना की है। ७०० से अधिक सूत्रों की उन्होंने बिना उनमें कोई दोष दिखाये सुन्दर व्याख्या की है, करीब १० सूत्रों को व्यर्थ बताया है, तथा लगभग ५४० सूत्रों में परिवर्तन एवं परिष्करण किया है। कात्यायन पाणिनि के प्रति उचित श्रद्धा भी यत्र-तत्र प्रदर्शित करते हैं। परन्तु उन्होंने अनेक स्थलों पर पाणिनि को समझने में ही मूल की है और कहीं-कहीं वे अनुचित आलोचना भी कर गये हैं। इस अनौचित्य की ओर महाभाष्यकार पतञ्जलि ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। कात्यायन के वार्तिक श्लोक और गद्य दोनों में हैं। वे दाक्षिणात्य थे जैसा 'प्रियतद्धिता दाक्षिणात्याः' महाभाष्य के इस वाक्य से प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त कात्यायन वाजसनेयी प्रातिशाख्य के भी प्रणेता हैं।''

महाभाष्य की रचना करने वाले पतंजलि भी ईसा पूर्व के विश्व प्रसिद्ध भाषा विज्ञान के विद्वान माने जाते हैं। पतंजलि ने महाभाष्य के अन्तर्गत पाणिनिकृत अष्टाध्यायी के दोषों को दूर करने के साथ ही लोकभाषा में पालि एवं प्राकृत को भी व्यवस्थित करने का महनीय कार्य किया है।

पाणिनि पश्चात् भाषा अध्ययन की परम्परा:

पाणिनिकृत अष्टाध्यायी के बाद भाषा पर सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तकें कौमुदी कही जाती हैं। वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी जिसे सिद्धान्तकौमुदी के नाम से भी जाना जाता है, भट्टोजि दीक्षित की प्रसिद्ध व्याकरण पुस्तक है। भट्टोजि दीक्षित के ही शिष्य वरदराज कृत एक अन्य महत्त्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ लघुसिद्धान्तकौमुदी है जो आधुनिक संस्कृत व्याकरण के अध्येताओं के बीच प्रसिद्ध है। कौमुदी ग्रन्थों की वर्तमान में प्रसिद्धि का कारण इसमें संस्कृत की सम्पूर्ण व्याकरण का समावेश होना भी है।

पाणिनीय व्याकरण की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले भर्तृहरि भारतीय शिक्षा जगत के प्रसिद्ध वैयाकरण माने जाते हैं। भर्तृहरि के व्याकरण ग्रन्थ का नाम वाक्यपदीय है। वाक्यपदीय शब्द का निर्माण दो शब्दों के संयोग से हुआ है - वाक्य और पदीय। अर्थात् इस ग्रन्थ में वाक्य और पद, इन दोनों पर विचार करने वाला। वाक्यपदीय को तीन विभागों में विभाजित किया गया है जिनके अन्तर्गत विभिन्न कारिकाओं के माध्यम से व्याकरण के अनेक सिद्धान्तों की चर्चा की गई है।

संस्कृत व्याकरण के सुप्रसिद्ध वैयाकरण नागेश भट्ट को नागोजि भट्ट के नाम से भी जाना जाता है। ये व्याकरण के साथ-साथ दर्शन, ज्योतिष और योग के भी विद्वान थे। लघुशब्देन्दुशेखर, बृहच्छब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर, मञ्जूषा, लघुमञ्जूषा, परमलघुमञ्जूषा, स्फोटवाद, महाभाष्य-प्रत्याख्यान-संग्रह और महाभाष्य पर उद्योत नामक टीका इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। वैयाकरण-सिद्धांत-मंजूषा इनका सर्वप्रतिष्ठ व्याकरण ग्रन्थ है जिसके अन्तर्गत दर्शन पर भी गहन चिन्तन किया गया है। इनके अधिकतम ग्रन्थों की रचना पूर्व के वैयाकरणों की व्याख्या करने के उद्देश्य से हुई है।

कौण्डभट्ट एक प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण के आचार्य थे जो भट्टोजि दीक्षित के भतीजे भी कहे जाते हैं। वैयाकरणभूषण, वैयाकरणभूषणसार तथा लघुवैयाकरणभूषण इनके प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ हैं जो भट्टोजि दीक्षित की रचना शब्दकौस्तुभ की व्याख्या के उद्देश्य से लिखे गए हैं।

सिद्धहेमशब्दानुशासन की रचना करने वाले आचार्य हेमचन्द्र व्याकरण के श्रेष्ठतम विद्वान माने जाते हैं। राजा सिद्धराज जयसिंह की प्रेरणा से लिखे गए इस ग्रन्थ में व्याकरण के पाँच अंगों का समावेश किया गया है। इन पाँचो अंगों के नाम हैं - मूलपाठ, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिप्रत्यय एवं लिङ्गानुशासन। इस ग्रन्थ में लगभग पैंतीस सौ से अधिक सूत्रों को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है। हेमचन्द्र को अन्तिम संस्कृत व्याकरणाचार्य भी माना जाता है।

- **अर्वाचीन भाषा अध्ययन परम्परा**

संस्कृत की परम्परा को नवीन सरोकारों से जोड़ते हुए भारत के भाषाशास्त्रियों ने अध्ययन के नवीन आयाम स्थापित किए। भाषा की यात्रा उसे परिवर्तित करती है। भाषा परिवर्तन का तात्पर्य उसकी व्याकरण, उच्चारण व्यवस्था एवं अर्थ विज्ञान में परिवर्तन से है। इस परिवर्तन को सूक्ष्म रूप से देखकर अध्ययन करने वाले भारतीय विद्वानों का उल्लेख निम्नवत् है-

सुनीति कुमार चटर्जी: साहित्य अकादमी एवं संस्कृत कमीशन के अध्यक्ष रहे सुनीति कुमार चटर्जी भारत के प्रख्यात भाषाविद माने जाते हैं। बांग्ला भाषा का उद्भव तथा विकास (व्तपहपद ंदक क्मअमसवचउमदज व िठंदहंसमम स्ंदहनंहम) उनकी सबसे चर्चित पुस्तक मानी जाती है। ग्रीक, जर्मन, लैटिन, फ्रेंच, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला तथा हिन्दी आदि दर्जनों भाषाओं के ज्ञाता सुनीति कुमार चटर्जी की इक्कीस पुस्तकें अंग्रेजी की, पन्द्रह बांग्ला एवं सात पुस्तकें हिन्दी भाषा में प्रकाशित हैं जो हमेशा ही भाषा के अध्येताओं की मार्गदर्शक हैं।

कामता प्रसाद गुरु: हिन्दी के प्रसिद्ध वैयाकरण कामता प्रसाद गुरु का नाम भाषा चिन्तकों में परम आदर के साथ लिया जाता है। सन 1920 में 'हिन्दी व्याकरण' के नाम से प्रकाशित उनकी पुस्तक हिन्दी भाषा की सबसे वृहद व्याकरण पुस्तक है। संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण, मध्य हिन्दी व्याकरण तथा प्रथम हिन्दी व्याकरण इसी के संक्षिप्त संस्करण हैं। कामता प्रसाद गुरु वास्तव में हिन्दी भाषा के प्रथम वैयाकरण हैं जिन्होंने सर्वप्रथम व्यवस्थित हिन्दी व्याकरण की रचना की, जो आज भी भाषा के क्षेत्र में मील का पत्थर माना जाता है।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा: इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रथम हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे डॉ. धीरेंद्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास तथा हिन्दी भाषा और लिपि नामक अपनी सर्वप्रतिष्ठित पुस्तकों के लिए जाने जाते हैं। ब्रजभाषा व्याकरण उनकी एक अन्य महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित व्याकरण पुस्तक है जिसमें ब्रजभाषा के व्याकरण को व्यवस्थित किया गया है।

डॉ. रामविलास शर्मा: डॉ. रामविलास शर्मा भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी उतने ही प्रतिष्ठित भाषाविद रहे हैं जितने कि वह साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त साहित्यकार और आलोचक। उनकी पुस्तक 'ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा' भाषा के इतिहास और भारतीय भाषा परिवारों की विस्तृत जानकारी को स्वयं में समाहित किए हैं। भाषा विज्ञान से सम्बन्धित उनकी अन्य पुस्तकें 'भाषा और समाज', 'भारत की भाषा समस्या', 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी' (तीन खंड) भाषा विज्ञान की श्रेष्ठतम पुस्तकें हैं।

डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा: हिन्दी भाषा का विकास, भाषा विज्ञान की भूमिका जैसी भाषा की प्रतिष्ठित पुस्तकों की रचना करने वाले डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा आधुनिक भाषा विज्ञान एवं चिंतन के पारखी आचार्य माने जाते हैं। उनका एक भाषा वैज्ञानिक निबंध भाषा और भाष्य भी इस क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण रचना है।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र: पद्म भूषण से सम्मानित पंडित विद्यानिवास मिश्र यूं तो साहित्य के पुरोधा माने जाते हैं लेकिन भाषा के क्षेत्र में उनका योगदान कमतर नहीं है। इसी योगदान के लिए उन्हें आधुनिक वैयाकरण और भाषाविद कहा जाता है। हिन्दी और हम उनकी हिन्दी भाषा पर प्रसिद्ध पुस्तक है।

आचार्य किशोरीदास बाजपेयी: हिन्दी के प्रसिद्ध व्याकरण आचार्य किशोरीदास वाजपेयी भाषा किस क्षेत्र में अपनी विद्वता और योगदान के लिए हिन्दी के पाणिनि के नाम से भी जाने जाते हैं। हिन्दी

शब्दानुशासन, अच्छी हिन्दी, हिन्दी शब्द निर्णय, ब्रजभाषा का प्रौढ़ व्याकरण, भारतीय भाषा विज्ञान आदि भाषा पर उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

उदयनारायण तिवारी: हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में उदयनारायण तिवारी का योगदान वही है जो साहित्य का इतिहास लेखन में आचार्य शुक्ल का है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला, अवेस्ता आदि भाषाओं के विद्वान तिवारी जी अंग्रेजी, अरबी, तथा ग्रीक आदि भाषाओं के भी अच्छे जानकार थे। भाषा के क्षेत्र में हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, भोजपुरी भाषा और साहित्य, हिन्दी अंग्रेजी शब्दकोश उनकी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी: सुगम भाषा विज्ञान के लोकप्रिय प्रणेता कहे जाने वाले डॉ. भोलानाथ तिवारी सैद्धांतिक एवं अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के प्रतिष्ठित विद्वान माने जाते हैं। स्वयं को सदैव भाषा का विद्यार्थी कहने वाले डॉ. तिवारी का भाषा के क्षेत्र में योगदान सर्वविदित है। भाषा विज्ञान के लगभग प्रत्येक अंग को उन्होंने अपनी लेखनी से व्याख्यायित किया है। अपनी पुस्तकों में भाषाविज्ञान, हिन्दी भाषा की संरचना, हिन्दी ध्वनियाँ और उनका व्याकरण, मानक हिन्दी का स्वरूप, भाषा विज्ञान प्रवेश, भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी भाषा आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कोश विज्ञान तथा अनुवाद विज्ञान के क्षेत्र में भी उनका योगदान विशेष रूप से सराहनीय माना है।

डॉ. हरदेव बाहरी: प्रो. दिलीप सिंह डॉ. हरदेव बाहरी को हिन्दी भाषा की अस्मिता का संवाहक मानते हैं। उन्होंने इसे हिन्दी भाषा का सौभाग्य कहा है कि हिन्दी को संप्रेषणीय भाषावैज्ञानिक लेखन करने वाले भाषा चिन्तक मिलते रहे हैं। डॉ. हरदेव बाहरी को हिन्दी का कोशकार, भाषावैज्ञानिक तथा प्रसिद्ध शिक्षाविद् माना जाता है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास' दस खण्डों में वर्गीकृत है जिसके अंतर्गत उन्होंने भाषा के विविध पक्षों और स्वरूपों का वर्णन किया है।

आधुनिक भारत में भाषा-वैज्ञानिक कार्य

''भाषा-वैज्ञानिक कार्यों की दृष्टि से आधुनिक युग विशेष सक्रिय नहीं रहा । अधिकांश कार्य पश्चिमी विद्वानों द्वारा हुए हैं। फिर भी कुछ भारतीय विद्वानों का नाम अवश्य उल्लेखनीय है। रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर (विल्सन व्याख्यान माला) डॉ० सुनीत कुमार चटर्जी (मूल भारोपीय भाषा), डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा (ध्वनि, भाषा और बोलियाँ), डॉ० कन्ने कोंकणी सुभद्रा झा (मैथिली), विनायक मिश्र (उड़िया), सुकुमार सेन (बंगला), भेरूमल महरचन्द (सिन्धी), के० पी० कुलकर्णी (मराठी), केशवराम काशोराम शास्त्री (गुजराती), रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल (बुंदेली), सीता- राम लालस (राजस्थानी), कान्तिकुमार (छत्तीसगढ़ी), जयदेव सिंह (वांगरू), श्रीराम शर्मा (दक्खिनी हिन्दी), तारापुरवाला (अवेस्ता), नीलकंठ शास्त्री (तमिल), नसिह (कन्नड़), डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (ब्रज), डॉ०० बाबूराम सक्सेना तथा रामज्ञा द्विवेदी (अवधी), बनारसी दास जैन (पंजाबी), दुनीचन्द (हिन्दी-पंजाबी), बालीकांत काक्रेय- (असमी), रामास्वामी अय्यर (मलयालम) डॉ० उदयनारायण तिवारी (भोजपुरी), कामता प्रसाद गुरु (हिन्दी), हरिशंकर जोशी (कुमायुनी), मोइनुद्दीन कादरी (हिन्दु- स्तानी ध्वनि) डॉ० हरदेव बाहरी (हिन्दी अर्थ-विचार) आदि व्यक्तियों ने महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं । इनके अतिरिक्त व्याकरण के विभिन्न अंगों पर भी पर्याप्त कार्य हुआ हैं। शिवनाथ एम० ए० का 'हिन्दी-कारक-चिह्न' आदि ऐसे ही कार्य हैं।...वस्तुतः भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन काल का कार्य ही भारतीय प्रजा के लिए गौरव का विषय है। उसकी प्रशंसा भारतीय मनीषियों ही ने नहीं प्रत्युत् विश्व के अनेक भाषात्तत्त्वविदों ने की है।''

(ब) पाश्चात्य चिन्तनधारा

पाश्चात्य दुनिया में भाषा संबंधी अध्ययन की परंपरा भारतीय परंपरा के बहुत बाद में आरंभ हुई। भारतीय इस अध्ययन परंपरा का आरंभ करने वाला कदाचित प्रथम राष्ट्र है। पश्चिमी देशों में भाषा संबंधी अध्ययन का प्रथम प्रयोग ओल्ड टेस्टामेंट में मिलता है, जिसमें जानवरों के नामकरण को लेकर विचार किया गया था।

पाश्चात्य दुनिया में भाषा विज्ञान का पिता अरस्तु को माना जाता है। अरस्तु भाषा की उत्पत्ति को परंपरा का परिणाम मानते हैं, चूंकि अरस्तु भाषाशास्त्री ना होकर एक दार्शनिक के रूप में अधिक जाने जाते हैं तथापि उन्हें पाश्चात्य दुनिया में भाषा अध्ययन का पिता सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है।

संरचनावाद और प्रतीक विज्ञान की भूमिका बनाने वाले सस्यूर को आधुनिक भाषा विज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है। सस्यूर का पूरा नाम फर्डिनांद द सस्यूर (थ्मतकपदंदक कम ैंनेेनतम) है।

पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही भाषा विज्ञान पर चिंतन आरंभ करने वाले सस्यूर के भाषा अध्ययन के क्षेत्र में योगदान को रेखांकित करते हुए प्रो. दिलीप सिंह लिखते हैं - ''प्रतीक व्यवस्था के रूप में भाषा को देखने के कारण ही सस्यूर का दृष्टिकोण भाषा को मात्र 'व्यवस्था' नहीं, 'व्यवहार' के रूप में भी देख सका। उन्होंने सबसे पहले भाषा को एक 'मानवीय व्यवहार' के रूप में देखा और भाषा की व्याख्या भी वे उसे मानव व्यवहार के अन्य क्षेत्रों से काटकर नहीं करना चाहते थे। इस प्रकार सस्यूर ने 'भाषा' और 'भाषाविज्ञान' दोनों को एक व्यापक आधार भूमि प्रदान की। इसीलिए उन्होंने एक ऐसे भाषाविज्ञान की कल्पना की 'जो समाज के भीतर प्रतीकों के जीवन, प्रयोग और प्रकार्य का अध्ययन करने वाला हो।' वास्तव में सस्यूर ने सामान्य भाषा विज्ञान की नींव ही बदल डाली।''

सस्यूर के बाद भाषा विज्ञान के क्षेत्र में पाश्चात्य चिन्तनधारा में दूसरा महत्त्वपूर्ण नाम है चॉम्स्की का। आधुनिक भाषा विज्ञान का मास्टर माइंड कहे जाने वाले चॉम्स्की के नाम पर भाषा विज्ञान के क्षेत्र में एक क्रांति का उदय हुआ जिसे चॉम्स्कियन क्रांति के नाम से जाना जाता है।

प्रसिद्ध भाषाविद भोलानाथ तिवारी विदेशों में भाषा विज्ञान शीर्षक के अन्तर्गत विदेशी भाषा विज्ञान पर संक्षेप में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करते हुए लिखते हैं - ''विदेशों में जब भाषा विज्ञान के अध्ययन के बारे में चर्चा होती है तो सर्वप्रथम बीन और जापान का नाम आता है। इसके उपरांत धर्मग्रंथों को समझने व उनका विश्लेषण करने के लिए भाषा विज्ञान का आश्रय लिया गया। परन्तु अरव भाषा विज्ञान के अध्ययन में सीरिया तथा पर्शिया का नाम आता है। इन पर भारत का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। यदि योरोप की बात करें तो यहाँ सुकरात और प्लेटो जैसे स्वनामधन्य दार्शनिकों ने भाषा पर भी यत्र-तत्र विचार व्यक्त किए हैं, परन्तु ये विचार क्रमबद्ध नहीं हैं। अरस्तू जैसे विचारक और थ्रेक्स जैसे व्याकरणाचार्यों ने भी भाषा संबंधी चिंतन किया है व इस दिशा में अपने विचार व्यक्त किए हैं। इस दिशा में लिबनिज जैसे दार्शनिक का योगदान भुलाया नहीं जा सकता है। आधुनिक विचारकों में विलियम जौस, कोलब्रुक, फ्रीड्रिख वान श्लेगल, विल्हेम फान हम्बोल्ट, रेज्मसरैक्स, याकोब ग्रिम, आगस्ट पॉट, रैप, श्लाइखर जैसे लब्धप्रतिष्ठ विचारकों ने भाषा विज्ञान के ज्ञान को आगे बढ़ाया। कुर्टिअस, मैडविग, मैक्समूलर विलिय ह्विटनी, हैमैन, ग्रैसमैन, वर्नर, येस्पर्न जैसे विद्वान् अग्रणी हैं। अमेरिका के प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी ब्लूम फील्ड, चाम्स्की जैसे विद्वानों का योगदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। ससूर, पाइक, आर्वर, आस्कोली जैसे विद्वानों की भी आधुनिक भाषा विज्ञान् को नया आयाम देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा विज्ञान आज विश्व के प्रत्येक कोने में पढ़ा और पढ़ाया जा रहा है तथा इसके विकास हेतु अध्ययन, विश्लेषण व शोध निरंतर जारी हैं।''

2. निष्कर्ष

मानव अपनी भाषा को परिष्कार हेतु सदैव प्रयासरत रहा है। उसके प्रयास के कारण ही उच्चारण अवयवों, बलाघातों अथवा प्रयत्नों का अध्ययन का आरंभ हुआ। इस अध्ययन ने भाषा की व्यापकता को सुस्थापित कर उसके अर्थ वैभव को समेकित करने का सफल प्रयास किया। आज भाषाएँ देश की दहलीज को पारकर विश्व में अपने स्वरूप को स्थापित कर रही हैं। कुछ भाषाएं वैश्विक भाषाएँ बनने को आतुर हैं। यह सब उपक्रम भाषा वैज्ञानिक शोध और अध्ययन का ही परिणाम है। भाषाओं की अपनी रचना प्रक्रिया है। अपनी उपादेयता और अपना क्षेत्र है। और तो और इन भाषाओं की अपनी संस्कृति और अपने संस्कार हैं। इनको जीवित रखना और प्रवाहवान बनाए रखना उस समाज का नैतिक दायित्व है जिस समाज में ये व्यवहारित होती हैं। बात बोली से लेकर भाषा के मानकीकरण तक की होनी चाहिए। भाषा विज्ञान पर बहुतेरे शोध निष्कर्ष यही हैं कि भाषा की एकत्मक सत्ता को कैसे बचाए रखा जाए। प्रस्तुत शोध पत्र में भाषा विज्ञान के अध्ययन की परंपरा का अनुशीलन किया गया है साथ ही इस अध्ययन से जुड़ने वाले तत्त्वों का अनुशीलन भी करने का विनम्र प्रयास उपस्थित ह।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Dr. Shyamsundar Das, Linguistics, Edition 2011, Publication Institute, New Delhi, Page No. 19-20

Prof. Dilip Singh, World of Language, Edition 2010, Lokmangal Publication, Shahdara, Delhi, Page 30 Page No. 14-15, Linguistics,

Dr. Shyamsundar Das, Publication Institute, New Delhi, Edition 2011

Dr. Baburam Saxena, Sanskrit Grammar Praveshika, Edition 2012, Page 32-33

Dr. Dan Bahadur Pathak 'Var', Dr. Manhar Gopal Bhargava, Linguistics (Hindi Language and Script), Publication Center, Lucknow, Page 20

Prof. Dilip Singh, World of Language, Edition 2010, Lokmangal Publication, Shahdara, Delhi,

Bholanaath Tiwari, Linguistics Entry and Hindi Language, Kitabghar Publication, New Delhi, Page 196